Tender Heart High School, Sector-33 B Chandigarh.

कक्षा- दसवीं
विषय- हिन्दी साहित्य शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-8 'भीड़ में खोया आदमी' लेखक-लीलाधर शर्मा पर्वतीय

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या 51 पर दिए पाठ-8 'भीड़ में खोया आदमी' को पढ़ेंगे व समझेंगे।

बच्चो! आगे बढ़ने से पहले यह जान लेते हैं कि पिछले सप्ताह हमने क्या पढ़ा था।
'भीड़ में खोया आदमी' लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' द्वारा रचित राष्ट्रीय समस्या पर आधारित निबंध है। लेखक के एक मित्र हैं बाबू श्यामलाकांत। श्यामलाकांत सीधे-सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। उनके कई बच्चे हैं। श्यामलाकांत की बेटी की शादी है, जिसमें सम्मिलित होने के लिए लेखक को हरिद्वार जाना है। पिछले दो वर्षों से श्यामलाकांत हरिद्वार में ही रहते हैं। लेखक हरिद्वार के लिए पंद्रह दिन पहले आरक्षण करवाने जाते हैं परन्तु जब तक लेखक का नंबर आता है तो किसी भी गाड़ी में सीट नहीं बचती। आरक्षण न मिलने पर भी लेखक विवाह में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार जाने का निर्णय

लेते हैं। कुली एक भीड़ भरे कंपार्टमेंट में लेखक को खिड़की के रास्ते घुसा देता है। बाहर निकलने के लिए भी लेखक को खिड़की का सहारा ही लेना पड़ता है। गाड़ी में केवल भीतर ही भीड़ नहीं थी बल्कि गाड़ी की छत भी यात्रियों से भरी हुई है। लेखक सोचते हैं कि ऐसा क्यों है कि रेल के नियम, व्यवस्था, अनुशासन को भुलाकर लोग ट्रेन की छतों पर चढ़कर यात्रा कर रहे हैं। यदि नियम और कानून को छोड़ भी दें तो भी छत पर यात्रा करने वालों ने अपने प्राण संकट में डाले हुए हैं। इसका एक ही कारण है कि देश की जनसंख्या इतनी बढ़ गई है कि अब नियम के अनुसार ट्रेन के भीतर स्थान पाया नहीं जा सकता।

बच्चो ! अब पृष्ठ संख्या 52 से पढ़ना आरंभ करते हैं। जब लेखक हरिद्वार स्टेशन पहुँचे तो श्यामलाकांत का बड़ा लड़का दीनानाथ उन्हें लेने आया। दीनानाथ की पढ़ाई दो वर्ष पूर्व पूरी हो गई थी परन्तु अभी तक उसे रोज़गार नहीं मिला था। लेखक ने जब यह सुना तो दीनानाथ को बताया कि अब तो जगह - जगह रोज़गार के लिए कार्यालय खुल गए हैं जहाँ से तुम अपना नाम दर्ज (पंजीकृत) करवा सकते हो। वे लोग जरूरत होने पर सूचित करते हैं। दीनानाथ ने लेखक को बताया कि वह रोज़गार कार्यालय में नौकरी के लिए अपना नाम लिखवाने गया था। रोज़गार कार्यालय की दशा बहुत खराब थी। घंटों लाइन में खड़े होने के बाद जब दीनानाथ की बारी आई तो वहाँ के अधिकारी ने उसका नाम तो लिख लिया परन्तु

साथ में यह भी कह दिया कि वह जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा न रखे क्योंकि उसके जैसी योग्यता के हज़ारों व्यक्तियों के नाम पहले ही उनके कार्यालय में दर्ज हैं।

रोज़गार कार्यालयों में प्रतिदिन हज़ारों बेरोज़गार अपना नाम लिखवाने आते हैं। वहाँ के कर्मचारी नाम तो लिख लेते हैं पर साथ में यह भी बता देते हैं कि उन्हें जल्दी नौकरी नहीं मिलने वाली क्योंकि पहले से ही बहुत बेरोज़गार पंजीकृत हैं। लेखक दीनानाथ की बात सुनकर सोचने लगे कि एक छोटे से शहर में ही व्यक्ति को नौकरी पाने के लिए इतनी मेहनत करनी पड़ रही है तो बड़े शहरों में तो नौकरी न मिलना कोई बड़ी बात नहीं है।

लेखक जब श्यामलाकांत के घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनका घर बहुत छोटा है। घर में शादी का तथा अन्य सामान ठसाठस भरा है। उनका परिवार भी बड़ा था। मकान हवादार नहीं था। लेखक को वहाँ पहुँचकर घुटन महसूस होने लगी। लेखक ने अपने मित्र श्यामलाकांत से कहा कि क्या तुम्हारे पास यही दो कमरे हैं। मित्र ने बताया कि आजकल आवास की समस्या इतनी अधिक हो गई है कि दो वर्ष से इस शहर में आने के बाद भी मकान की तलाश में भटक रहा हूँ। शहर के चक्कर काट - काट कर जूते घिस गए अर्थात् शहर के बहुत चक्कर लगाए फिर भी असफल रहा। खुला हवादार मकान न मिलने पर आखिरकार सिर छिपाने के लिए इस गली के अन्दर इस छोटे -से

दो कमरे के मकान में ही किसी तरह निर्वाह कर रहे हैं। लेखक बताते हैं कि शहर पहले की तुलना में बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि शहरों की जनसंख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। गाँवों से लोग रोज़गार की तलाश में शहरों में आते हैं। वे मकान की तलाश में यहाँ - वहाँ भटकते रहते हैं। इसलिए शहरों से दूर - दूर नई कॉलोनियाँ बनाई जा रही हैं जिससे शहर पहले की तुलना में फैलते जा रहे हैं परन्तु फिर भी आवास की समस्या का पूरी तरह समाधान नहीं हो पाया है। जनसंख्या वृद्धि के कारण लोगों को न रहने के लिए मकान मिल रहे हैं और न खाने के लिए अन्न। लेखक के मित्र का स्वयं का परिवार बड़ा है। इस कारण उन्हें भी कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

बच्चो! आज हम अपने इस पाठ को यहीं विराम देते हैं। आप सभी इस पाठ को पृष्ठ संख्या 52 तक पुन: पढ़ेंगे एवं पूर्णता से समझने का प्रयास करेंगे।

## गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

"भाई, नाम तो तुम्हारा लिख लेता हूँ पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना"।

प्रश्न (क) यह पंक्ति कौन, किससे कह रहा है और क्यों कह रहा है?

प्रश्न (ख) उसे नौकरी खोजते कितने वर्ष हो गए? उसे नौकरी क्यों नहीं मिल रही है?

प्रश्न (ग) इस पंक्ति में लेखक ने देश की किस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है और कैसे?

प्रश्न (घ) इस समस्या के समाधान के लिए कोई दो बिंदु लिखें।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]